# जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

*(पांडुशिला, सिंघासन , छत्र , चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश, पूजा बर्तन चंदोवा, तोरण, झारी)*

**नोट** :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

**Contact:-**
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

# जयजिनेन्द्र

## गाय का शुद्ध देशी घी

### शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

### घी ऐसा के दिल जीत जाये !

**अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध**

### संपर्क सूत्र

Contact For Order

**Sourabh Sagar Indore**

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

**All India Home Delivery**

# श्रीशीतलनाथजिन-पूजा

[कविवर मनरंगलाल]

स्थापना-गीताछन्द

है नगर भद्दिल भूप द्रढ़रथ सुष्ठु नन्दा ता त्रिया,
तजि अचुत-दिवि अभिराम शीतलनाथ सुत ताके प्रिया।
इक्ष्वाकुवंशी अंक श्रीतरु हेम-वरण शरीर है,
धनु नवे उन्नत पूर्व लख इक आयु सुभग परी रहे ॥

सोरठा

सो शीतल सुख-कन्द, तजि परिग्रह शिव-लोक गै।
छूट गयो जग-धन्ध, करियत तौ आह्वान अब ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नित तृषा-पीड़ा करत अधिकी दाव अबके पाइयो,
शुभ कुम्भ कंचन-जड़ित गंगा-नीर भरि ले आइयो।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जाकी महक सौं नीम आदिक होत चन्दन जानिये,

सो सूक्ष्म घिसके मिला केसर भरि कटोरा आनिये।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजों युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं जीव संसारी भयो अरु मर्त्यो ताको पार ना,
प्रभु पास अक्षत ल्याय धारे अखय-पद के कारना।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजों युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन मदन मोरी सकति थोरी रह्यो सब जग छायके,
ता नाश कारन सुमन ल्यायो महाशुद्ध चुनायके।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुध-रोग मेरे पिण्ड लागो देत माँगे ना धरी,
ताके नसावन काज स्वामी चारु लै आगे धरी।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तिमिर महान अन्धकार करि राखो सबै,
निज-पर सुभेद पिछान कारण दीप ल्यायो हूँ अबै।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जे अष्ट कर्म महान अतिबल घेरि मो चेरा कियो,
तिन केर नाश विचारि के ले धूप प्रभु ढिंग क्षेपियो।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष मिलन अभिलाष मेरे रहत कब की नाथ जू,
फल मिष्ट नाना भाँति सुथरे ल्याइयौ निज हाथ जू।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध अक्षत फूल चरु दीपक सुधूप कही महा,
फल ल्याय सुन्दर अरघ कीन्हो दोष सो वर्जित कहा।
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भव की ताप सौं,
मैं जजौं युग पद जोरि करि मो काज सरसी आप सौं ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी दिन आठ, गर्भावतार लेत भये स्वामी।
सुर नर असुरन जानी, जजहूँ शीतल प्रभु नामी ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी द्वादशि को, जन्मे भगवान सकल सुखकारी।
मति श्रुति अवधि विराजे, पूजों जिन-चरण हितकारी ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशि माघ वदी में, परिग्रह तजि वन बसे जाई।
पूजत तहाँ सुरासुर, हम यहाँ पूजत गुण गाई ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदशि पूस वदी में, जग-गुरु केवल पाय भये ज्ञानी।
सो मूरति मनमानी, मैं पूजों जिन-चरण सुख-खानी ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन सुदी अष्टमि दिन, मुक्ति पधारे समेदगिरि सेती।
पूजा करत तिहारी, नसत उपाधि जगत की जेती ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

जय शीतल जिनवर, परम धरमधर,
छवि के मन्दिर, शिव-भरता।
जय पुत्र सुनन्दा के गुण-वृन्दा,
सुख के कन्दा, दुख-हरता ॥
जय नासादृष्टी, हो परमेष्टी,
तुम पदनेष्टी, अलख भये।
जय तपो चरन मां, रहत चरन मां,
सुआचरण मां, कलुष गये ॥

स्रग्विणी छन्द

जय सुनन्दा के नन्दा तिहारी कथा,
भाषि को पार पावे कहावे यथा।
नाथ ! तेरे कभी होत भव-रोग ना,
इष्ट-वियोग अनिष्ट-संयोग ना ॥
अग्नि के कुण्ड में वल्लभा राम की,
नाम तेरे बची सो सती काम की ॥नाथ॰॥
द्रोपदी चीर बाढ़ो तिहारी सही,
देव जानी सबों में सुलज्जा रही ॥नाथ॰॥
कुष्ठ राखो न श्रीपाल को जो महा,
अब्धि से काढ़ लीनो सिताबी तहाँ ॥नाथ॰॥

अंजना कोटि फाँसी गिरो जो हतो,
औ सहाई तहाँ तो बिना को हतो ॥नाथ॰॥
शैल फूटो, गिरै अंजनीपूत के,
चोट जाके लगी ना तिहारै तके ॥नाथ॰॥
कूदियो शीघ्र ही नाम तो गायके,
कृष्ण काली नथो कुण्ड में जायके ॥नाथ॰॥
पाण्डवा जे घिरे थे लखागार में,
राह दीन्ही तिन्हें तू महाप्यार में ॥नाथ॰॥
सेठ को शूलिका पै धरो देखके,
कीन्ह सिंहासन आपनो लेखके ॥नाथ॰॥
जो गिनाये इन्हें आदि देके सबै,
पाद परसाद तैं वे सुखारी सबै ॥नाथ॰॥
वार मेरी प्रभू देर कीन्हीं कहा,
कीजिये दृष्टि दया की मो पै अहा ॥नाथ॰॥
धन्य तू धन्य तू धन्य तू मैनहा,
जो महा पंचमो ज्ञान नीके लहा ॥नाथ॰॥
कोटि तीरथ हैं तेरे पदों के तले,
रोज ध्यावें मुनी सो बतावें भले ॥नाथ॰॥
जानिके यों भली भाँति ध्याऊँ तुझे,
भक्ति पाऊँ यही देव दीजे मुझे ॥नाथ॰॥

गाथा

आपद सब दीजे, भार झोंकि यह, पढ़त सुनत जयमाल,
हो पुनीत करण, अरु जिह्वा वरते, आनन्द जाल।
पहुँचे जहँ कबहूँ पहुँच नहीं नहिं पाई, सो पावे हाल,
नहीं भयो कभी, सो होय सवेरा, भाषत मनरंगलाल ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भो शीतल भगवान, तो पद पक्षी जगत में।
हैं जेते परवान, पक्ष रहे तिन पर बनी ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

# अक्षयनिधि पूजा ( सौभाग्यदशमी पूजा )

( टीकाकार श्री 105 क्षु. सिद्धसागरजी महाराज )

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

स्थापना -दोहा

**स्वइष्ट शिवसुख के लिए, नमूं देव विश्वज्ञ।**
**सुगुण सिंधु दायक अमित, पुण्य हेतु सर्वज्ञ॥**
**हित वक्ता जिन पद यजूं, अक्षय निधि को ध्याय।**
**श्रावण सुदि दशमी तिथी, चिंतूं मैं मन लाय॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्म अक्षयनिधि महाव्रताय अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तेरा मेरा प्यार अमर है छन्द पद्धडी

**जल से अक्षय निधि को पूज, जन्म मरण भय हरता हूंज।**
**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल नहीं इस सम दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय जलम् निर्वपामिति स्वाहा॥

**चंदन से मन चंदन होता, जिन चरणों में मग्न जो होता ॥**
**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल नहीं इस सम दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा॥



**अक्षत से अक्षत पद पाता, अक्षय निधि पा शिवपुर जाता॥**

**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल नहीं इस सम दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

**सुमन सुमन करके जो लाता, जिन चरणों में इसे चढाता।**
**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल इस सम नहीं दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

**मोदक मन में मोद है भरता, पूजा कर मैं सब दुख हरता॥**
**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल इस सम नहीं दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

**स्वपर प्रकाशक दीपक लाया, स्वानुभव से मैं हर्षाया ।**
**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल इस सम नहीं दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

**परम सुगन्धित धूप बनाऊँ, ध्यान अग्नि धर कर्म जलाऊं॥**
**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल इस सम नहीं दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

**मोदक मन में मोद है भरता, पूजा कर मैं सब दुख हरता॥**
**तीन लोक से है यह पूज, चिंतत फल इस सम नहीं दूज॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधि महाव्रताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा॥

**समता जल है तप चन्दन है, अक्षय पद अक्षत मैं लाया।**
**सुमन सुमन सम फल सद् मोदक, स्वानुभव पर दीप जलाया**
**स्वात्म लब्धिमय फल पा करके, अनर्घ अर्घ में लेकर आया ।**
**आठ द्रव्य मय थाल सजाकर, इसीलिये चरणों में आया॥**



ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे अक्षयनिधिमहाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

**विशद सुज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण, मानूं मैं जिनवर की आण।**
**अक्षय सुखका है भंडार, वीतराग विज्ञान अपार॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपरमब्रह्मणे चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षयनिधि महाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 1॥

**पाप पंक शोषक जो सूर्य, चैतन्य चिह्न उपयोगी धूर्य।**
**शत इन्द्रों से सहित सनातन, करता है यह हमें निरंजन॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपरमब्रह्मणे चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षयनिधि महाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ 2॥

**अस्त शोक जागृत जो रहता, भव्य लोक को जागृत करता।**
**मोह तिमिर को मन से हरता, सर्व जीवको निर्भय करता॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षय निधि महाव्रताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।॥ 3॥

**कंदर्प सर्प का दर्प है हरता, गरुड समान विषम विष हरता।**
**पापहारी जिन नाम तुम्हारा, अमृतमय है वचन सुप्यारा॥**

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे चतुर्विंशति-जिनेभ्यो अक्षयनिधि महाव्रताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।॥ 4॥

**दर्प रहित शिवफल को चखते, जिन स्वरूप से कभी न चिगते।**
**मोह तरु का खंडन करते, प्रलय काल वात सम भजते।** अर्घ्यं० 5

**आनन्दकन्द स्वीकृत सद्धर्म, ध्यानाग्नि से दग्ध सब कर्म।**
**इन्द्रिय अश्व सब याग जलाये, कभी न आकुल होकर धाये।** अर्घ्यं० 6।

**भीतर स्वच्छज्ञायक की धुन है, बाहर स्याद्वादमय धुन है।**
**यथाख्यात चारित्र सुधा है, उसके आगे सब विषय मुधा है।** अर्घ्यं० 7।

**सम्यक्त्व कुमुदवन चन्द्र समाना, मंगलकारक अमित गुणजाना।**
**इष्ट प्रदायक सब जननायक, जय जय अक्षयनिधि के दायक।** अर्घ्यं० 8।

**उच्च भाव जनता में भरते, पाप कर्मगण को हैं हरते।**

सर्व प्रकाशक सिद्ध समाना, परम- निरंजन हमने माना। अर्घ्यं० 9।
आग्रह दम्भको प्रलय समाना, स्वाद्वाद को हमने माना।
सिद्धि वधू के पति प्रभु तुम हो, वस्तुतत्त्व कछु मेरे वश हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम ब्रह्मणे चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षयनिधि महाव्रताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥ 10॥

जयमाला (प्रक्षिप्त पाठ)

जल गंधादिक थाल सजाकर, मंत्र बोलकर उसे चढावे।
मंगल गावे भाव लगाकर, भव वनमें हम लौट न आवें॥ 1॥
परम शांत रस अक्षयनिधिका हमको सुरस लगे यह नीका।
अक्षयनिधि-व्रत हमको प्यारा, विधान इसका है सुखकारा॥ 2॥
अष्ट कर्ममय धूप जलाई, मुक्तिश्री सन्मुख तब आई।
सारी चिन्ता दूर पलाई, इसने भव की फेरी मिटाई॥ 3॥
आत्म थाल में द्रव्य सजाये, गुणमणि रत्न समान सुहाये।
भव्यों के मन को ये भाये, हर्ष हर्ष कर लेकर आये॥ 4॥

घत्ता

जब जगतं गुरुवर, परम सुखाकर, गुणनिधान कलिमलहरण।
जानी इन्द्र भूषण विदित सुखकर सिद्ध सिन्धु सेवक मंगलकरं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमब्रह्मणे चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षयनिधि महाव्रताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (दाहा)

वीतराग चौबीस येह, तीर्थ ईश जगदीश।
कल्याणक पांचों सहित, शांति करे शिवधीश॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

# सौभाग्य दशमी (श्री अक्षय निधि) व्रत कथा

श्री जिन को प्रणाम करि, अक्षयनिधि धीसार।
ताकूँ मैं भाषूँ अबै, अक्षय पद दातार।।

(सप्तऋद्धि भूषित "गौतम ऋषि" द्वारा राजा श्रेणिक को समाधान)

भारत देश के मगध प्रांत के राजगृही नगर के राजा मेघनाद एवं रानी पृथ्वी की यह कथा है। राजा–रानी के पुत्र नहीं था, सो रानी दुखित थी। राजा के कहने पर दोनों 'श्रीप्रभ' मुनि के सम्मुख आये तथा कौन–से कर्म का यह फल है ? यह पूछा।

मुनिराज ने बताया कि पूर्वभव में रतनपुर नगर के नगरसेठ श्रीवत्स तथा सेठानी श्रीयमती के भव में आपने एक दिन दो चारण ऋद्धिधारी मुनियों का आहार के लिए पड़गाहन किया था। रसना इंद्रिय के लोभवश सेठानी ने मीठे रसीले आम्र को अपने लिये रखकर मुनिराज को आहार में नहीं दिया। इस प्रकार दान अन्तराय के फल से आपको पुत्र नहीं हुआ। दोनों ने मुनिराज से पूछा यह पापकर्म कैसे खत्म होवे, सो उपाय बतावें।

श्रीप्रभ मुनिराज बोले, आगम अनुसार अक्षयनिधि व्रत इसका उपाय है। श्रावणसुदी दशमी को प्रोषध उपवास रखें। इसकी विधि इस प्रकार है :– उपवास के दिन अभिषेक पूजन अवश्य करें। एक मंगल कलश सुन्दर बनावें उसमें अक्षत पुष्प भरें और मुख पर दस पांखुड़ी के मध्य आम्रफल रखें तथा जिनेन्द्र पूजन रच अष्टद्रव्यों से करें तथा पश्चात् नवकार मंत्र की जाप्यमाला करें। देव–शास्त्र–गुरु की सेवा में हमेशा तत्पर रहें तथा मुनि आदि को आहारदान में उत्साहपूर्वक प्रवृत्ति रखें। एक माह नित्य पूजन का नियम रखें तथा दस वर्ष तक इसका पालन करें। दस वर्ष बाद शक्ति अनुसार उद्यापन करें। मंदिर में उपकरण भेंट करें। चार संघ को चारप्रकार के दान देवें। व्रत में दूषण लगने पर दुगना व्रत करें।

इस प्रकार व्रत पालन करने से राजा मेघनाद एवं रानी पृथ्वी को अमर्याद लक्ष्मी, सात पुत्र (तीन बार एक साथ दो–दो) हुए। समाधि मरण करके पुनः स्वर्ग सुख प्राप्त किया। कालान्तर में मोक्ष सुख भी मिला।